Answers to RHA–DS1/Set-3

1. (*i*) (घ) उपर्युक्त सभी

(*ii*) (क) जीवन-निर्वाह के लिए जरूरी साधनों की कमी हो गई है।

(*iii*) (ख) हम निस्वार्थी बनकर देशहित को सर्वोपरि मानेंगे।

(*iv*) (ख) कथन (A) सही और (B) गलत है।

(*v*) (घ) सभी मनुष्यों के द्वारा देशहित को सर्वोपरि मानने पर ही देश और समाज का कल्याण होगा।

2. (*i*) (घ) मोहनदास करमचंद गांधी

(*ii*) (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) उसकी गलत व्याख्या है।

(*iii*) (ग) गांधी जी ने जहर के घूँट स्वयं पीकर देश को स्वाधीनता का अमृत-घट दिया।

(*iv*) (क) गांधी जी के व्यक्तित्व

(*v*) (ग) मानवीकरण

3. (*i*) (ग) (1) और (2)

(*ii*) (क) 1–(*ii*), 2–(*i*), 3–(*iii*)

(*iii*) (ख) कथन (A) सरल और कथन (B) संयुक्त वाक्य है।

(*iv*) (ग) (1) इसलिए, (2) जो, वह

(*v*) (घ) लेकिन

4. (*i*) (क) कर्म की प्रधानता, कर्ता अनुपस्थित।

(*ii*) (घ) सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाएँ हो सकती हैं।

(*iii*) (ख) (1) कर्तृवाच्य का उदाहरण है।

(2) उसका कर्मवाच्य में रूपांतरण है।

(*iv*) (क) (1) कर्तृवाच्य, (2) कर्मवाच्य

(*v*) (क) (1) और (2) सही हैं।

5. (*i*) (ख) शीघ्रतापूर्वक

(*ii*) (ग) सकर्मक क्रिया, पुल्लिग, एकवचन, भूतकाल

(*iii*) (क) परिमाणवाचक, भोजन, पुल्लिग

(*iv*) (ग) पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।

(*v*) (घ) कुछ

6. (*i*) (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं।

(*ii*) (ख) 1–(*iii*), 2–(*i*), 3–(*ii*)

(*iii*) (क) श्लेष

(*iv*) (घ) जड़-चेतन पदार्थों को मानव क्रिया करते हुए दिखाए जाने पर मानवीकरण अलंकार होता है।

(*v*) (ग) (1) में उत्प्रेक्षा, (2) और (3) में मानवीकरण अलंकार है।

7. (*i*) (क) वह किसी नयी चीज़ की खोज़ करता है।

(*ii*) (घ) वह अपनी बुद्धि और विवेक से किसी नए तथ्य की खोज नहीं करता।

(*iii*) (ख) गुण, विशेषताओं

(*iv*) (क) न्यूटन संस्कृत व्यक्ति था और उसने अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर नए तथ्य गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की।

(*v*) (ग) कथन (A), (B) सही है, किंतु (C) गलत है।

8. (*i*) (क) कैप्टन के प्रति मज़ाक का भाव।

(*ii*) (ग) कथन (A) सही है और कथन (B) उसकी सही व्याख्या है।

9. (*i*) (क) क्रांतिकारी के रूप में।

(*ii*) (घ) असीम ऊर्जा

(*iii*) (घ) कथन (A) और कथन (B) दोनों सही हैं।

(*iv*) (क) बादलों की गर्जना में एक नवीनता है।

(*v*) (ग) मानो उनमें किसी बालक की कल्पना का विस्तार समाया है।

10. (*i*) (ग) कथन (A) और (C) सही हैं।

(*ii*) (क) मुर्दे में भी जान

11. (क) लेखक ने जब गाड़ी के सेकंड क्लास के डिब्बे में प्रवेश किया तो नवाब साहब एक बर्थ पर पालथी मारकर बैठे थे। उनके सामने दो ताज़े चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे। वे अनमने भाव से खिड़की के बाहर झाँक रहे थे। शायद वे लेखक को न देखने का नाटकीय प्रदर्शन कर रहे थे। उन्होंने किसी भी तरह से लेखक के प्रति कोई रुचि नहीं दिखाई। उनके हाव-भाव व चेहरे पर असंतोष के भाव को देखकर लेखक को लगा कि उनका डिब्बे में आना नवाब साहब को पसंद नहीं आया।

(ख) मन्नू भंडारी का अपने पिता से वैचारिक मतभेद था। लेखिका के पिता अहंकारी, क्रोधी और शक्की स्वभाव के व्यक्ति थे। वे लेखिका को सीमित आजादी देने के पक्ष में तो थे लेकिन घर से बाहर जाकर आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी के विरुद्ध थे। वे मन्नू भंडारी के राजेन्द्र यादव से संबंध को लेकर भी नाराज थे क्योंकि वे उनका विवाह अपनी पसंद के लड़के से कराना चाहते थे।

(ग) बिस्मिल्ला खाँ सादा जीवन व्यतीत करते थे। सभी धर्मों का सम्मान करते थे। एक तरफ काशी विश्वनाथ के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी तो दूसरी तरफ पाँच बार नमाज़ भी पढ़ते थे। 'भारतरत्न' से सम्मानित होकर भी उन्हें कभी अहंकार नहीं हुआ। उन्होंने खुदा से धन-संपदा नहीं माँगी। केवल सच्चा सुर ही चाहा। उन्होंने हमेशा हिन्दू-मुसलमानों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा दी। इन गुणों के आधार पर ही उन्हें एक सच्चा इंसान कहा जा सकता है।

(घ) 'नेताजी का चश्मा' पाठ में पानवाले द्वारा कैप्टन का मज़ाक उड़ाना यह साबित करता है कि देशभक्ति की भावना आजकल मज़ाक की चीज बनती जा रही है। यही कारण है आज लोगों में स्वतंत्रता सेनानियों व देश-प्रेमियों के प्रति आदर-सम्मान में कमी आ रही है। स्वार्थी व आत्म-केंद्रित लोग उनका मज़ाक उड़ाते हैं।

12. (क) फागुन मास में प्रकृति में नया निखार आ जाता है। प्रकृति नव-पल्लव व पुष्पों से सुशोभित हो जाती है। चारों तरफ हरियाली का वातावरण छा जाता है। शीतल मंद, सुगंधित पवन से मौसम सुहावना हो जाता है। सर्वत्र प्रफुल्लता, उल्लास एवं उत्साह का संचार हो जाता है। इस प्रकार इस कविता में फागुन की आभा व प्राकृतिक सुंदरता का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया गया है।

(ख) संगतकार मुख्य गायक का सहयोगी होता है। वह उसका सम्मान करता है। इसलिए वह मुख्य गायक के गायन को अपने गायन से प्रभावहीन नहीं बनाना चाहता। वह अपने स्वर को ऊँचा नहीं उठाता। यह उसकी कमजोरी नहीं है, बल्कि मनुष्यता है। यह वास्तव में उसकी असफलता नहीं बल्कि मुख्य गायक के लिए त्याग है।

(ग) फ़सल के उगने में ताप तथा नमी की जरूरत होती है। ताप उसे सूरज की किरणों से मिलती है और नमी हवा से। सूरज की किरणों का रूपांतरण ही भोजन के रूप में फ़सल बनकर संचित होता है। इसी से उसमें वृद्धि और विकास होता है। हवा का स्पर्श पाकर फ़सलें अपना संकोच त्यागकर फलने-फूलने लगती हैं।

(घ) उत्साह एक आह्वान गीत है। कवि बादलों की गर्जना का आह्वान करके समाज में परिवर्तन लाना चाहता है। वह चाहता है कि बादल गरजकर समाज में क्रांति की चेतना एवं उत्साह का संचार करें। समाज को नवजीवन प्रदान कर गतिशीलता प्रदान करें। साथ ही वह यह भी चाहता है कि बादल जल वर्षा कर गर्मी से पीड़ित धरती एवं लोगों की प्यास बुझाकर उन्हें शीतलता व संतुष्टि प्रदान करें।

13. (क) बच्चे के प्रति माँ का वात्सल्य प्रेम ही है कि बच्चे का पेट भरा होने पर भी वह उसे जबरदस्ती खाना खिलाती है। बच्चे को बुरी नजर से बचाने के लिए उसके माथे पर काजल की बिंदी लगाती है। उसकी चोटी गूँथकर उसमें फूलदार लट्टू बाँधकर रंगीन, कुरता-टोपी पहनाकर उसे कन्हैया बना देती है। चोट लगने पर हल्दी पीसकर घावों पर लगाती है। वह भयभीत बच्चे को अपने आँचल में छिपा लेती है और अपने गले से लगा लेती है। वह बच्चे को दुखी देखकर स्वयं भी रोने लगती है। इस तरह वह भोलानाथ को अपने स्नेह से सींचती और उसके सुख-दुख का पूरा-पूरा ध्यान रखतीं ।

(ख) लेखिका ने देखा कि कुछ पहाड़ी औरतें पत्थरों पर बैठी पत्थर तोड़ रही थीं। कोमल-काया वाली औरतों के हाथों में कुदाल और हथौड़े देखकर वह हतप्रभ रह गई। कुछ की पीठ पर बँधी बड़ी टोकरी में उनके बच्चे भी बंधे हुए थे। सूरज ढलने के बाद लेखिका ने देखा कि कुछ पहाड़ी औरतें गायों को चराकर वापस लौट रही थीं। कुछ के सिर पर लकड़ियों के भारी-भरकम गट्ठर थे। चाय के हरे-भरे बागानों में कई युवतियाँ चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थी। अद्वितीय सौंदर्य से बेखबर श्रम करती औरतों को देखकर लेखिका भाव-विभोर हो गई।

(ग) (1)–(*iii*), (2)–(*i*), (3)–(*ii*)

(*i*) सूर्योदय होते ही धीरे-धीरे एक उजास ने वातावरण को आलोकित कर दिया।

(*ii*) आसमान में मँडराते बादल बारिश के आगमन का संदेश दे रहे हैं।

(*iii*) गतिशील सौंदर्य जीवन के आनंद का क्षणिक स्रोत है।

14. (क) **जननी और जन्मभूमि**

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात् जन्म देने वाली माता और जन्मभूमि दोनों ही स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। जिस प्रकार से माता अपने बच्चे का पालन-पोषण अनेक कष्टों को सहकर बड़े ही स्नेह से करती है वैसे कोई और नहीं कर सकता। ठीक उसी प्रकार से हमारी मातृभूमि भी हम पर अनेक उपकार करती है। वह हमें अपनी गोद में माता के समान ही आश्रय देती है। जिस प्रकार से माता अपनी संतान पर अपना सारा प्यार लुटाती है और हमें इस संसार में रहने योग्य बनाती है। ठीक वैसे ही धरती माँ भी स्वयं पर उगे हुए फल, अन्न आदि के द्वारा हमारे शरीर को पुष्ट करती है। हम इस पर बहने वाली नदियों का अमृतमय जल पीकर ही जीवित रह पाते हैं। यह धरती माँ हम सबको बिना किसी भेदभाव के जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने आँचल में आश्रय देती है। माता और जन्मभूमि के सुख के आगे स्वर्ग का सुख भी कुछ नहीं है।

हम अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहें। हम इसकी सुरक्षा और सम्मान पर भी कोई आँच न आने दें। यह हम सभी के लिए बड़े गौरव की बात है कि हमने भारतभूमि पर जन्म लिया है। हम सबको मिलकर यह प्रण लेना चाहिए कि हम अपनी धरती माँ को हर प्रकार के संकट से मुक्ति दिलाएँगे।

(ख) **भौतिकवादी युग और मनुष्य**

आज का समय पूर्ण रूप से भौतिकवादी बन गया है। आज प्रत्येक मनुष्य जीवन जीने के लिए अधिक से अधिक साधन जुटाने में लगा हुआ है। ताकि वह अपने लिए अधिक से अधिक भौतिक सुख साधनों को इकट्ठा कर सके। ऐसे में वह स्वयं से और अपने परिवार से भी दूर होता चला जा रहा है। यह व्यस्त दिनचर्या किसी भी इंसान को आर्थिक संपन्नता तो दे सकती है किंतु मानसिक सुख कभी नहीं दे सकती। आज के इस आधुनिक युग ने मनुष्य को मानसिक तनाव जैसी विसंगतियों से जूझने को मजबूर कर दिया है। तनाव किसी भी व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से कमजोर करता है। भौतिक साधनों को जुटाने की इस होड़ ने आज के मनुष्य के जीवन का सच्चा सुख छीन लिया है। प्रत्येक मनुष्य को इस विषय में अवश्य सोच विचार करना चाहिए कि क्या ये भौतिक साधन उसे वास्तविक सुख व आनंद की अनुभूति करा रहे हैं। यदि नहीं तो उसे स्वयं के लिए और अपने परिवार के लिए समय निकालकर कुछ समय एक साथ व्यतीत करना चाहिए। यही सच्चा मानसिक सुख प्रदान कर सकता है।

(ग) **सच्चा सुख निरोगी काया**

आज के समय में मनुष्य की जीवन-शैली में बहुत अधिक परिवर्तन आ गया है। वह अपने हर छोटे-से-छोटे कार्य के लिए शारीरिक श्रम करने की अपेक्षा मशीनी उपकरणों पर निर्भर रहने लगा है। शारीरिक श्रम न कर पाने के कारण आज हम अनेक प्रकार की शारीरिक और मानसिक बीमारियों का शिकार होते जा रहे हैं। इसके लिए कहीं न कहीं हमारे खान-पान में आए बदलाव भी जिम्मेदार हैं। आज हम सभी पौष्टिक भोजन के स्थान पर जंक फूड, फास्ट फूड आदि का सेवन अधिक करने लगे हैं। यदि हम स्वस्थ जीवन जीना चाहते हैं तो हमें अपने खान-पान में बदलाव करना होगा। किसी भी मनुष्य के लिए सच्चा सुख वही होता है यदि वह पूरी तरह से स्वस्थ है। स्वस्थ जीवन जीने के लिए हमें योग को और शारीरिक श्रम को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। शारीरिक श्रम या योग का अभ्यास करने से हमारी मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं। हमारे शरीर का प्रत्येक अंग लचीला बनता है। आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में यदि मनुष्य मानसिक और शारीरिक तौर पर स्वस्थ रहना चाहता है तो उसे प्रतिदिन योगाभ्यास करना और पौष्टिक भोजन करना इन दोनों को अपनी दिनचर्या में शामिल करना होगा तभी वह निरोगी शरीर वाला हो सकेगा और वास्तविक रूप में सुखी जीवन जी पाएगा।

15. परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 21 मार्च, 20xx

प्रिय मित्र

सप्रेम नमस्कार।

मुझे तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकार मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम भी बाढ़ पीड़ितों की मदद करने के इस अभियान में हिस्सा ले रहे हो। यह एक अच्छा कार्य है। हम भी यहाँ बाढ़ पीड़ितों की सेवा के अभियान में हिस्सा ले रहे हैं। हमने अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर खाने के लिए भोजन सामग्री और कुछ कपड़े एकत्रित किए हैं। हमारे समूह के सभी सदस्यों ने विभिन्न क्षेत्रों में घर-घर जाकर बाढ़-पीड़ितों की मदद के लिए अधिक से अधिक सामान जुटाने का काम किया है। जगह-जगह इसके लिए कैम्प भी लगाए गए। हममें से ही कुछ लोग इस सभी सामान को बाढ़ पीड़ितों तक पहुँचाने जाएँगे। दल का नेता होने के कारण मुझे अतिरिक्त जिम्मेदारी सँभालनी पड़ी है। हमारे इस कार्य की क्षेत्र के लोगों ने और समाचार-पत्रों ने भी सराहना की है।

आशा है कि तुम भी अपने क्षेत्र में इस प्रकार के सामाजिक कार्य करके अपने दायित्व का पूर्ण निर्वहन करोगे।

तुम्हारा मित्र

आशीष

अथवा

सेवा में

थानाध्यक्ष महोदय

य.र.ल. नगर

दिनांक : 4 जून, 20xx

विषय– लड़कियों के प्रति बढ़ रहे अपराध के संबंध में।

महोदय,

मैं दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र की निवासी हूँ। मैं आपके संज्ञान में लाना चाहती हूँ कि पिछले कुछ दिनों से हमारे क्षेत्र में लड़कियों के साथ छेड़छाड़ के मामले बहुत अधिक बढ़ गए हैं। सभी लड़कियाँ सुबह अपने दफ़्तर या विद्यालय जाने के लिए घर से निकलती हैं तो रास्ते में जाते समय कुछ असामाजिक प्रवृत्ति के लोग भद्दे-भद्दे कमेंट्स करते हैं। लड़कियों के द्वारा विरोध करने पर उन्हें बाद में देख लेने की धमकी भी देते हैं। इन सभी समस्याओं के कारण सभी लड़कियों का घर से निकलना मुश्किल हो गया है।

मुझे पूरी आशा है कि आप हमारी इस परेशानी को दूर करने के लिए उचित कार्यवाही अवश्य करेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

आकांक्षा

16. कार्यालय सहायक के पद के लिए स्ववृत्त

नाम – महेश गुप्ता

पिता का नाम – श्री राजेश कुमार गुप्ता

माता का नाम – श्रीमती रूपा गुप्ता

जन्मतिथि – 14 मई, 1998

वर्तमान पता – B-5/22, रोहिणी, दिल्ली

स्थायी पता – उपर्युक्त

मोबाइल नं० – 9297xxxxxx

ई-मेल – mgupta@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र०सं०	परीक्षा/डिग्री/डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	2014	अ.ब.स. विद्यालय सी.बी.एस.ई.	हिंदी, अंग्रेज़ी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान,	प्रथम	69%
2.	बारहवीं कक्षा	2016	अ.ब.स. विद्यालय सी.बी.एस.ई.	हिंदी, अंग्रेज़ी, राजनीति विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र	प्रथम	71%
3.	बी०ए० ऑनर्स	2019	श.ष.स. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	अर्थशास्त्र	प्रथम	74%
4.	कंप्यूटर प्रोग्राम में डिप्लोमा	2020	इग्नू, नई दिल्ली	कंप्यूटर विज्ञान	प्रथम	75%

उपलब्धियाँ

• महाविद्यालय में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

कार्यानुभव

• अ.ब.स. विद्यालय में विद्युत विभाग में सहायक कंप्यूटर ऑपरेटर के रूप में 1 वर्ष से कार्यरत।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि आवेदित पद के लिए सभी योग्यताएँ मुझमें है। मैं पूरी निष्ठा के साथ काम करूँगा।

धन्यवाद सहित

महेश गुप्ता

अथवा

प्रेषक : abc@gmail.com

प्राप्तकर्ता : pqr@gmail.com

प्रतिलिपि (सीसी) : stv@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी) : xyz@gmail.com

विषय : मच्छरों को मारने की दवाई के छिड़काव के संदर्भ में।

महोदय,

मैं विकासपुरी, दिल्ली की निवासी हूँ। आजकल मेरे मोहल्ले के सभी लोग बहुत अधिक मच्छर होने के कारण परेशान हैं। कुछ लोगों को तो मलेरिया और डेंगू भी हो गया है। बारिश होने के कारण जगह-जगह पानी इकट्ठा हो जाता है। कहीं-कहीं गंदगी होने के कारण भी ऐसा होता है। ये मच्छर पानी और खाने-पीने की चीजों को भी दूषित करते हैं।

आपसे नम्र निवेदन है कि आप हमारे क्षेत्र में मच्छरों को मारने वाली दवाई का अधिक से अधिक छिड़काव कराएँ जिससे हम सबको इन मच्छरों से छुटकारा मिल सके।

कृपया मेल स्वीकार कीजिए।

धन्यवाद।

भवदीया

गार्गी

17.

सेल **सेल** **सेल**

अब आपके शहर में सूती कपड़ों पर भारी सेल

सेल

बम्पर सेल

दो सूती दुपट्टों के साथ एक फ्री

- दुपट्टे
- साड़ी व सूट

सूटों पर 50% की भारी छूट

✦ शीघ्र करें! ऑफर सीमित समय के लिए है

संपर्क करें : य.र.ल. नगर, मो. 8868xxxxxx

अथवा

संदेश

दिनांक : 25 मई, 20xx

पूर्वाह्न : 8:00 बजे

आदरणीय माताजी,

सादर प्रणाम!

आप मेरे जीवन की प्रेरणा रही हैं। आपने कठिनाइयों से कभी भी न घबराते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहने के लिए सदा ही मुझे प्रेरित किया है। आज मैं जो कुछ भी हूँ आपकी वजह से ही हूँ।

मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप हमेशा खुश रहें, स्वस्थ रहें।

आपको मेरी तरफ से मदर्स-डे की ढेर सही शुभकामनाएँ।

क.ख.ग.